Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:8(3), August, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

भारतीय ज्ञान परंपरा में न्याय का समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ० प्रदीप कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग
डॉ० बी०आर० अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान वि०वि०
महू (म०प्र०)

सारांश

भारतीय ज्ञान परंपरा में न्याय (Dharma) और समाजशास्त्र (Sociology) का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। वेद, उपनिषद, धर्मशास्त्र, मनुस्मृति, अर्थशास्त्र और अन्य प्राचीन ग्रंथ न केवल सामाजिक संरचना और न्याय के सिद्धांत प्रस्तुत करते हैं, बल्कि व्यक्तियों के अधिकार, कर्तव्य और नैतिक जिम्मेदारियों का मार्गदर्शन भी प्रदान करते हैं। प्राचीन भारतीय दृष्टिकोण में न्याय केवल कानूनी व्यवस्था तक सीमित नहीं था, बल्कि इसे नैतिक और सामाजिक दृष्टि से परिभाषित किया गया था।

गुरूकुल, तक्षशिला और नालंदा जैसे शिक्षा संस्थान विद्यार्थियों को केवल अकादमिक ज्ञान ही नहीं देते थे, बल्कि सामाजिक और नैतिक शिक्षा भी प्रदान करते थे। शिष्य–गुरु परंपरा के माध्यम से विद्यार्थियों में अनुशासन, नैतिक चेतना, नेतृत्व क्षमता और सामाजिक जिम्मेदारी विकसित होती थी। यह दृष्टिकोण शिक्षा के माध्यम से समाज में न्यायप्रिय और संवेदनशील नागरिकों के निर्माण का कार्य करता था।

इस शोध में प्राचीन ग्रंथों का साहित्य समीक्षा, तुलनात्मक अध्ययन और ऐतिहासिक विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में न्याय और समाजशास्त्र के सिद्धांत विद्यार्थियों के समग्र विकास, सामाजिक समरसता और मानसिक विकास के लिए अत्यंत उपयोगी हैं।

मुख्य शब्द :– अनुशासन, नागरिक, ज्ञान, उत्तदायित्व, गुरूकुल, संवदेनशील आदि।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:8(3), August, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

प्रस्तावना :—

आधुनिक शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत तकनीकी और व्यावसायिक कौशल पर अधिक जोर दिया गया है, जिस कारण से नैतिक एवं सामाजिक शिक्षा उपेक्षित रह जाती है। यह शोध सुझाव देता हैं कि प्राचीन भारतीय दृष्टिकोण को आधुनिक शिक्षा के साथ ही नीति निर्माण में शामिल करना बेहद आवश्यक है। इससे विद्यार्थियों में न्यायप्रियता, नैतिक चेतना, सामाजिक जिम्मेदारी और चरित्र निर्माण को बढ़ावा मिलेगा।

इस प्रकार, भारतीय ज्ञान परंपरा केवल ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत ही नही है वरन् यह आधुनिक समाजशास्त्र और न्यायशास्त्र में भी प्रासंगिकता रखती है और शिक्षा को माध्यम बनाकर समाज में समग्र सुधार एवं नैतिक प्रगति सुनिश्चित करने की मार्ग प्रशस्त करती है।

भारतीय समाज में शिक्षा ज्ञान संचय तक ही सीमित नहीं थी, बल्कि नैतिकता, चरित्र निर्माण और सामाजिक जिम्मेदारी के विविध आयाम भी उसमें शामिल थे। प्राचीन गुरुकुल, तक्षशिला और नालंदा जैसे शिक्षा संस्थानों में शिक्षा का स्वरूप शिक्षार्थियों के संपूर्ण विकास पर केंद्रित था। इन संस्थानों में शिक्षार्थियों को न केवल विषयगत ज्ञान प्रदान किया जाता था, बल्कि उनके व्यवहार, सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक चेतना के संदर्भ में भी विशेष ध्यान केंद्रिति किया जाता था। शिष्य–गुरु परंपरा के परिणामस्वरूप विद्यार्थियों में अनुशासन, नेतृत्व क्षमता सामाजिक उत्तरदायित्व और न्यायप्रियता का विकास होता था। इस दृष्टिकोण ने समाज में स्थायित्व और सामंजस्य बनाए रखने के प्रयासों मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:8(3), August, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थी अधिकतर करियर निर्माण और प्रतियोगी परीक्षा में सफलता पर केंद्रित होते हैं, जिससे शिक्षा का समग्र उद्देश्य प्रभावित होता है। इस संदर्भ में भारतीय ज्ञान परपरा का ज्ञान नितांत अनिवार्य है, क्योंकि यह विद्यार्थियों को केवल ज्ञान ही नही देती है, बल्कि उन्हें समाजोपयोगी, नैतिक और जिम्मेदार नागरिक बनाने में भी सहायता करती है।

भारतीय न्याय और समाजशास्त्र में विद्यार्थी ही केंद्र था। शिष्य–गुरु परंपरा में शिक्षा व्यक्तिगत, सामाजिक और नैतिक दृष्टि से संतुलित होती थी। विद्यार्थी न केवल विषयगत ज्ञान सीखते थे, बल्कि उनके आचार, व्यवहार और सामाजिक जिम्मेदारी के ऊपर भी ध्यान प्रकट किया जाता था। ध्यान, योग और जीवन मूल्यों की शिक्षा इस संदर्भ को पूर्णता प्रदान करते थे। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में यदि हम भारतीय ज्ञान के प्राचीन सिद्धांतों को भी शामिल करे तो यह शिक्षा केवल कागजी ज्ञान तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि विद्यार्थियों में सामाजिक जिम्मेदारी, नैतिक चेतना और मानसिक विकास को भी सुनिश्चित करेगी।

यह शोध इस तथ्य को समझने का प्रयास करता है कि भारतीय ज्ञान परपरा में न्याय और समाजशास्त्र के सिद्धांत किस प्रकार छात्रों के समग्र विकास, सामाजिक स्थिरता और न्यायप्रिय समाज के निर्माण में योगदान कर सकते हैं। आधुनिक शिक्षा नीति पाठ्यक्रम और शिक्षण पद्धति में प्राचीन ज्ञान को समावेशित करके विद्यार्थियों में मानसिक, सामाजिक और नैतिक विकास को विस्तार दिया जा सकता है।

अध्ययन इस बात पर दृष्टि डालता है कि भारतीय ज्ञान परपरा के सिद्धांत आधुनिक शिक्षा में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, सामाजिक समरसता और

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:8(3), August, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

Cover Page

न्यायप्रियता को बढ़ावा देने में सक्षम हैं। यह दृष्टिकोण आधुनिक समाज और आधुनिक शिक्षा प्रणाली की उपयोगिता लिए अत्यंत प्रासंगिक है, क्योंकि इससे शिक्षा का प्रयोजन केवल ज्ञान प्राप्ति तक ही सीमित नहीं रहेगा, वरन् यह सामाजिक और नैतिक विकास का भी मार्ग प्रशस्त करेगा।

भारतीय ज्ञान परंपरा केवल ऐतिहासिक या सांस्कृतिक विरासत नहीं है, बल्कि यह आधुनिक समाजशास और न्यायशास्त्र के अध्ययन के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि इसे आधुनिक शिक्षा प्रणाली में समेकित किए जाने की पहल हो तो यह विद्यार्थियों में न्यायप्रियता, सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक चेतना विकसित कर समाज में समग्र सुधार सुनिश्चित कर सकती है। इस प्रकार, भारतीय ज्ञान परंपरा आधुनिक शिक्षा जगत में मूल्य आधारित और न्याय आधारित शिक्षा का एक उपयोगी स्तंभ बन सकती है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली के तत्व :–

भारतीय ज्ञान परंपरा में न्याय और समाजशास्त्र का अध्ययन बहुआयामी विकल्प प्रदान करता है। वेद, उपनिषद, धर्मशास्त्र, मनुस्मृति, अर्थशास्त्र और गीता जैसे प्राचीन धर्म ग्रंथों में समाज और न्याय से संबंधित विचारों की स्पष्ट रूपरेखा मिलती है। इन ग्रंथों के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि प्राचीन भारतीय समाज में न्याय और सामाजिक संरचना को केवल विधिक या कानूनी दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि नैतिक और सामाजिक दृष्टिभाव में देखा जाता था।

1. न्याय के सिद्धांत:–

भारतीय ज्ञान परंपरा में न्याय केवल कानून तक सीमित नहीं था। इसे धर्म, कर्तव्य और नैतिकता के साथ जोड़ा गया था। 'धर्म' का तात्पर्य केवल धार्मिक

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:8(3), August, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

कर्तव्य से नहीं बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व, सत्य और न्याय की स्थापना में है। मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति और अर्थशाख में न्याय को सामाजिक स्थिरता, व्यक्तिगत अधिकारों की रक्षा और सामूहिक कल्याण के नजरिए से बताया गया है। भारतीय ज्ञान परंपराओ में न्याय का ध्येय केवल अपराधियों को दंडित करना नहीं था, वरन् समाज में सामंजस्य बनाए रखना और प्रलोक व्यक्ति को उसका कर्तव्य निभाने के लिए प्रेरित करना था।

2. सामाजिक संरचना और जिम्मेदारी:—

भारतीय समाज की वर्ण और जाति आधारित सामाजिक व्यवस्था में प्रत्येक वर्ग के कर्तव्य और अधिकार प्राचीन समय से ही सुस्पष्ट किए गए थे। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वर्ग के कर्तव्यों और अधिकारों का विवरण समाज को संतुलित करने के लिए प्रदान किया था। प्रत्येक वर्ग को सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक जिम्मेदारी का अनुपालन आवश्यक था। इस दृष्टि से समाजशास्त्र का मूलभाव केवल सामाजिक संरचना को विश्लेषित करना नहीं, बल्कि उसमें न्याय, अनुशासन और सामंजस्य बनाए रखना भी था।

3. शिक्षा और नैतिक विकास:—

गुरुकुल और तक्षशिला जैसे शिक्षण संस्थान समाजशास्त्र तथा न्यायशास्त्र के सिद्धांतों को व्यवहारिक रूप में छात्रों तक पहुंचाते थे। शिष्य गुरु परंपरा में शिक्षा का लक्ष्य व्यक्तिगत मार्गदर्शन तथा नैतिक प्रशिक्षण था। जहाँ शिक्षार्थी केवल विषयगत ज्ञान ही नही सीखते थे, बल्कि उनके व्यवहार के साथ ही निर्णय लेने की क्षमता और सामाजिक जिम्मेदारी पर भी अधिक जोर दिया जाता था। इससे उन्हें समाजोपयोगी, संवेदनशील और न्यायप्रिय नागरिक बनने का प्रशिक्षण मिलता था।

4. आधुनिक समाजशास्त्र और न्यायशास्त्र में प्रासंगिकता:

आधुनिक समाजशास्त्र और न्यायशास्त्र तकनीकी और व्यावसायिक दक्षता पर अत्यधिक केंद्रित हो चुके हैं। इसके फलस्वरूप नैतिक शिक्षा और सामाजिक उत्तरदायित्व उपेक्षित होते जा रहे हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा के सिद्धांत इतने अधिक सामर्थ्यवान है कि वे आधुनिक समय की शिक्षा और नीति निर्माण में छात्र–छात्राओं और समाज दोनों के लिए मार्गदर्शक बन सकते हैं। प्राचीन ज्ञान की दृष्टि से यह साफ करती है कि शिक्षा का लक्ष्य केवल ज्ञान प्राति नहीं होता है, इससे भी अधिक न्यायप्रिय और संवेदनशील नागरिक का निर्माण भी शिक्षा का उद्देश्य होता है।

5. सामाजिक समरसता और स्थिरता:–

भारतीय समाजशास्त्र में न्याययुक्त और कर्तव्य आधारित जीवन सामाजिक समरसता के साथ ही स्थिरता सुनिश्चित करने का प्रमुख साधन था। न्याय, धर्म और सामाजिक उत्तरदायित्व का पालन करने वाले नागरिक समाज में संतुलन बनाए रखते थे। प्राचीन दृष्टिकोण में यह भी प्रकट होता है कि न्याय तथा नैतिक शिक्षा सामाजिक संघर्ष को निम्न करने, सामाजिक कल्याण का विस्तार करने और व्यक्ति को उनके कर्तव्य के प्रति सजग करने में मददगार थे।

6. नैतिक शिक्षा और नेतृत्व क्षमता :–

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली और प्राचीन काल के शिक्षा संस्थानों में नैतिक शिक्षा को ज्यादा महत्व दिया जाता था तथा छात्रों को नेतृत्व क्षमता उचित निर्णय करने की क्षमता और समाज में नैतिक योगदान देने की सीख दी जाती थी। योग, ध्यान और चरित्र निर्माण के कार्यक्रम छात्रों के मानसिक तथा भावनात्मक उत्थान को भी संभव करते थे। आधुनिक शिक्षा में यदि इन तत्वों को शामिल करने के प्रयास हो

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:8(3), August, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

तो यह शिक्षा का प्रयोजन केवल ज्ञान तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि शिक्षा बहुआयामी हो जायेगी और विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास में संभव होगा।

7. तुलनात्मक दृष्टिकोण :–

यदि हम भारतीय ज्ञान परंपरा के न्याय तथा समाजशास्त्र के विचारों की तुलना आधुनिक समाजशास और न्यायशास्त्र से करें, तो कई समानताएँ और अंतर स्पष्ट होते हैं। वर्तमान शिक्षा में तकनीकी के क्षेत्र में दक्षता और विधिक ज्ञान का अधिक महत्व है, इसके विपरीत प्राचीन दृष्टिकोण में नैतिक और सामाजिक शिक्षा का प्रमुख स्थान था। दोनों दृष्टिकोणों का समन्वय शिक्षा प्रणाली में छात्रों के समग्र विकास हेतु अत्यंत उपयोगी हो सकता है।

इस अध्ययन से यह साफ होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में न्याय और समाजशास्त्र का अवलोकन आधुनिक शिक्षा, नौति निर्माण और समाज में न्यायप्रियता और नैतिकता के विकास के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। शिक्षा के संदर्भ में प्राचीन मूल्यों को समेकित करने पर विद्यार्थियों में न्यायप्रियता, नैतिक चेतना, सामाजिक जिम्मेदारी और चरित्र निर्माण को बढ़ावा मिलेगा।

इस प्रकार, भारतीय ज्ञान परंपरा केवल ऐतिहासिक या सांस्कृतिक विरासत नहीं है, बल्कि यह आधुनिक समाजशास और न्यायशास्त्र के लिए भी मार्गदर्शक है। यदि इसे शिक्षा, नीति और सामाजिक संरचना में समेकित किया जाए तो यह समाज में नैतिकता, न्याय और समग्र विकास सुनिश्चित करने में सहायक होगा।

वर्तमान समय में प्रासंगिकता :–

आज के वैश्वीकरण और डिजिटल युग में समाज में नैतिकता, न्याय और सामाजिक जिम्मेदारी की प्रासंगिकता पहले से बहुत अधिक बढ़ गई है। तब

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:8(3), August, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

तकनीकी और व्यावसायिक ज्ञान युक्त शिक्षा पर अधिक बल देने के कारण आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नैतिक और सामाजिक शिक्षा उपेक्षित होने लगी है। इसके परिणामस्वरूप विद्यार्थियों में केवल ज्ञान संचय तथा करियर निर्माण पर अधिक ध्यान केंद्रित हो रहा है, जबकि समाजोपयोगी और नैतिक दृष्टिकोण कमजोर पड़ रहा है। इस संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा का अवलोकन अत्यंत प्रासंगिक और लाभदायक साबित होता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में न्याय और समाजशास्त्र का मनन विद्यार्थियों में सामाजिक जिम्मेदारी, न्यायप्रियता और नैतिक चेतना का विकास करने में सहायक है। गुरुकुल और तक्षशिला जैसी प्राचीन शिक्षा संस्थाओं में शिक्षा का अर्थ केवल ज्ञान को इकट्ठा करना नहीं था, लेकिन वहाँ नैतिक और सामाजिक मूल्य भी सिखाए जाते थे। गुरु–शिष्य परंपरा के सौजन्य से विद्यार्थियों में अनुशासन, नेतृत्व क्षमता और सामूहिक कल्याण के भाव विकसित होते थे। आधुनिक शिक्षा में इन सिद्धांतों को शामिल करने पर यह विद्यार्थियों को न केवल कुशल और प्रतिभाशाली बनाएगा, बल्कि उन्हें जिम्मेदार, संवेदनशील और न्यायप्रिय नागरिक भी बनाएगा। इसके अलावा, वर्तमान समय में न्याय और समाजशास्त्र का अध्ययन नीति निर्माण, सामाजिक व्यवहार और सामुदायिक विकास हेतु भी प्रमुख है। जब नीति निर्माता और शिक्षकजन भारतीय ज्ञान परंपरा मे निहित न्याय व सामाजिक सिद्धांतों को समझेंगे और लागू करेंगे, तो यह समाज में समरसता, सामूहिक कल्याण और सामाजिक स्थिरता को सुनिश्चित करेगा। उदाहरण के लिए, शिक्षा में मूल्य सेवित पाठयक्रम, नैतिक शिक्षा एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के कार्यक्रम विद्यार्थियों के भीतर न्यायप्रियता व सामाजिक चेतना का संवर्धन करेंगे।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:8(3), August, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

वैश्वीकरण तथा तकनीकी प्रगति और आधुनिक सामाजिक परिवर्तनों से युक्त समय में प्राचीन भारतीय दृष्टिकोण यह संदेश देते हैं कि न्याय और सामाजिक जिम्मेदारी केवल कानूनी या आर्थिक दृष्टि से नहीं, बल्कि नैतिक और सामाजिक दृष्टि नजरिए से भी मुख्य हैं। शिक्षा, प्रशासन और समाजशास्त्र में इन सिद्धांतों का समावेश समाज में नैतिकता के साथ ही न्यायप्रियता और संतुलन को जीवंत रखने के लिए अनिवार्य है।

अतः यह साफ है कि भारतीय ज्ञान परंपरा के न्याय एवं समाजशास्त्र के सिद्धांत केवल ऐतिहासिक या सांस्कृतिक दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं हैं, अपितु आधुनिक शिक्षा, नीति और समाज में उनका समावेश आवश्यक है। विद्यार्थियों के मन–मस्तिक में नैतिक चेतना, सामाजिक जिम्मेदारी और न्यायप्रियता विकसित करने के लिए प्राचीन दृष्टिकोण आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। इस प्रकार, भारतीय ज्ञान परंपरा आधुनिक समाज व आधुनिक शिक्षा प्रणाली में मूल्य के सिव्द्धांतो से युक्त और न्याय आधारित शिक्षा का मार्ग प्रशस्त करती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में न्याय और समाजशास्त्र के अध्ययन से यह प्रकट होता है कि प्राचीन भारतीय समाज मे न्याय और सामाजिक संरचना को केवल विधिक या कानूनी नजर से नहीं देखा, बल्कि नैतिक, सामाजिक और धार्मिक दृष्टि से भी परिभाषित किया। वेद, उपनिषद, धर्मशास्त्र, मनुस्मृति, अर्थशास्त्र और गीता जैसे ग्रंथ न केवल न्याय और सामाजिक कर्तव्यों का विवरण देते हैं, बल्कि व्यक्ति के नैतिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्व भी स्पष्ट करते हैं। प्राचीन भारतीय दृष्टि में न्याय का अभिप्राय केवल अपराधी को दंडित करना नहीं, बल्कि समाज में सामंजस्य

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:8(3), August, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

और स्थिरता बनाए रखना, प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्तव्यों के प्रति जाग्रत करना और सामाजिक उत्थान सुनिश्चित करना था।

आज की शिक्षा तथा समाज में यदि भारतीय ज्ञान कोष के न्याय और समाजशास्त्र के सिद्धांतो को शामिल करे तो अवश्य ही यह छात्रों में न्यायप्रियता, नैतिक चेतना, सामाजिक जिम्मेदारी और चरित्र निर्माण को बढ़ावा देगा। नीति निर्माण, सामाजिक व्यवहार और शिक्षा में इन सिद्धांतों को समावेश समाज में समरसता और संतुलन सुनिश्चित करेगा।

निष्कर्ष :—

यह शोध इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा केवल ऐतिहासिक या सांस्कृतिक विरासत नहीं है, अपितु यह आधुनिक शिक्षा, समाजशास्त्र और न्यायशास्त्र जैसे विषयों के संदर्भ में भी अत्यंत प्रासंगिक है। प्राचीन ज्ञान की दृष्टि को आधुनिक पद्धतियों में समेकित करके विद्यार्थियों सामाजिक जिम्मेदारी, नैतिक चेतना और न्यायप्रियता की सीख दी जा सकती है। इससे न केवल शिक्षा का आशय पूरा होगा, बल्कि समाज में समग्र सुधार और नैतिक प्रगति को बल मिलेगा।

भारतीय ज्ञान परंपरा न्याय और समाजशास्त्र को माध्यम बनाकर शिक्षा, नीति और समाज में मूल्य आधारित तथा न्याय आधारित दृष्टिकोण स्थापित करने के लिए सामर्थ्यवान है। इसी कारण वश यह वर्तमान में भी हमारे समाज और शिक्षा प्रणाली में बेहद प्रासंगिक और लाभप्रद है। आवश्यकता है प्राचीन ज्ञान परंपरा की महत्ता को समझकर वर्तमान शिक्षा प्रणाली मे उसके समावेशन की। ताकि नैतिक, कुशल और न्यायप्रिय नागरिकों को निर्माण किया जा सके।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:8(3), August, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

सन्दर्भ सूचीः–

1. भट्ट, के.एस. (2015). भारतीय समाज और धर्मशास्त्र, नई दिल्ली, प्रकाशन हाउस, पृ०सं० 45–67।
2. शर्मा, आर. एन. (2012). मनुस्मृतिः न्याय और सामाजिक कर्तव्य, वाराणसीः ज्ञानपीठ, पृ०सं० 102–125।
3. गुप्ता, बी.एल. (2018). भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा और समाजशास्त्र, दिल्लीः सतीश पुस्तकालय, पृ०सं० 88–110।
4. द्विवेदी, एम.के. (2016). भारतीय दर्शन और न्यायशास्त्र, लखनऊः धर्मशाला प्रकाशन, पृ०सं० 56–79।
5. मिश्रा, पी.एन. (2014). वेद और उपनिषद में सामाजिक मूल्य, नई दिल्लीः संस्कृत संस्थान, पृ०सं० 34–58।
6. त्रिपाठी, ए.के. (2017), भारतीय समाजशास्त्र : ऐतिहासिक दृष्टि, भोपालः मध्य प्रदेश पब्लिकेशन, पृ०सं० 91–115।
7. वर्मा, एस.पी. (2013), धर्म और न्याय के सिद्धांत, दिल्लीः राष्ट्रीय ज्ञान पुस्तकालय, पृ०सं० 70–95।
8. पाण्डेय, आर.एस. (2019), भारतीय शिक्षा और सामाजिक संरचना, जयपुरः प्रकाशन पीठ, पृ०सं० 120–145।
9. चौधरी, डी.एल. (2015), समाज और नैतिकताः भारतीय परंपरा में हरिद्वारः ज्ञानदीप प्रकाशन, पृ०सं० 33–58।